

17. प्रियदर्शी अशोक महान्

- शंकर लाल शर्मा

भारत के संविधान को बनाने वालों ने राजचिह्न के रूप में अशोक के चक्र को चुना। यह चयन अशोक के उन महान् आदर्शों की प्रतिष्ठा है जिन्हें मान्यता देकर हम संसार के सभी देशों के साथ शान्ति, सह-अस्तित्व और मित्रता के संबंध बनाए रखने की नीति पर चल रहे हैं। आज सारा संसार भारत की इस नीति की न केवल सराहना करता है, अपितु इसे विश्वव्यापी मान्यता भी मिली है। इस चक्र से हमारे देश की धर्मनिरपेक्षता सूचित होती है।

अशोक के पिता बिन्दुसार अपने बड़े पुत्र सुसीम को अपना उत्तराधिकारी बनाना चाहते थे। परन्तु अशोक ने पिता की मृत्यु के बाद अपने भाई का वध कर गद्दी हथिया ली। इस क्रूरता के कारण देश में खलबली मच गई और चार वर्ष के बाद ही अशोक का राज्य-अभिषेक हुआ। अशोक बड़ा क्रूर और उग्र स्वभाव का था। उसे अपने राज्य के विस्तार की धुन थी। महानदी और गोदावरी के बीच का क्षेत्र, जो आज उड़ीसा कहलाता है, तब कलिंग के नाम से जाना जाता था। अशोक ने कलिंग पर चढ़ाई कर दी। कलिंग के लोग स्वतन्त्रता प्रिय तथा साहसी थे। वे सामना करने के लिए तैयार हो गए। घमासान युद्ध हुआ। लगभग एक लाख लोग मारे गए तथा डेढ़ लाख बंदी बनाए गए। असंख्य लोग भूख, रोग आदि से मर गए।

कलिंग के महानाश को देखकर अशोक बहुत व्याकुल हो गया। उसका मन करुणा से द्रवित हो गया। उसने बुद्ध धर्म अपना लिया। हिंसा छोड़कर सेवा, अहिंसा एवं त्याग का मार्ग अपना लिया। अब तक जो वह विजय स्तंभ खड़े करता रहा था उन्हें धर्म के स्तंभ बनवाने लगा। उसने धनदान से भी बड़ा धर्मदान आरम्भ किया। युद्ध-विजय के स्थान पर धर्म विजय का डंका बजाया। राजनीति के बदले धर्मनीति को श्रेष्ठ माना। बुद्ध का धर्म जीवन को केन्द्र मानकर चलता है। अशोक एक राजा था। उसने प्रजा के जीवन के लिए धर्म की महत्ता भांप ली। उसने धर्मानुशासनों के शिलालेखों की भरमार कर दी। पत्थरों की ये पुस्तकें भारतीय कला की अमर निधियां हैं। चट्टानों पर, पहाड़ी टेकरियां पर, गुफाओं में व देश के सभी महत्त्वपूर्ण स्थानों पर उसने अपने आदेश, निर्देश और उपदेश छोड़े। कला के क्षेत्र में इतना सुन्दर, स्थायी और व्यापक कार्य संभवतया अन्य किसी राजा ने नहीं किया था।

अशोक ने देश भर में पशुओं की बलि बंद करवा दी। मनुष्यों तथा पशुओं के लिए अलग-अलग अस्पताल बनवाए। रास्तों के दोनों ओर छायादार पेड़ लगवाए। कुएं खुदवाए और यात्रियों के विश्राम के लिए धर्मशालाएं बनवाईं। जनता के हितों की रक्षा, सुख-सुविधा के उपाय व अनाथों, वृद्धों की सहायता के अनेक कार्यक्रम शुरू किए। सब के प्रति दया का बर्ताव किया जाता था। अपराधियों को कम सजा दी जाती थी। सांप्रदायिक प्रेम भाव की नींव भी तभी डाली गई।

प्रजा की दशा देखने के लिए अशोक स्वयं राज्य का भ्रमण करता था। वह कहता था कि-
“प्रजा मेरी संतान है।” अपनी संतान के लिए सब कुछ करने को वह तत्पर रहता था। उसके द्वार

प्रजा की पुकार सुनने के लिए हर समय खुले रहते थे। उसने अपनी सारी शक्ति और धन प्रजा हित के लिए अर्पित कर दिया। धर्म उसके लिए मधुर कर्तव्य था।

अशोक सभी धर्मों को समान भाव से देखता था। वह सभी प्रजाजनों की समभाव से सहायता करता था। स्वयं बौद्ध था इस लिए भिक्षु बन कर विहारों में रह लिया करता था। इतना निष्ठावान बौद्ध होने पर भी सांप्रदायिकता उसे छू तक नहीं गई थी। उसकी प्रजा को स्वेच्छा से धर्म अपनाने की छूट थी। अशोक सभी धर्मों का आदर करता था। उसका धर्म सदाचार का ही दूसरा नाम था। अपने कर्मियों को उसका आदेश था- प्रजा को धर्म से पालो। धर्म से विधान चलाओ। धर्म से जनता का हित करो। धर्म से जनता को सुख दो। धर्म से लोगों की रक्षा करो। तुम जनता के पालक हो, जतन से उसका लालन-पालन करो। वह केवल आदेश ही नहीं देता था। उसे कड़ाई से लागू भी करवाता था।

धर्म प्रचार के लिए अशोक ने सैंकड़ों चैत्य बनवाए। अशोक की लाटें चट्टानी हैं जिनकी ऊँचाई पचास फुट तक है। उनके ऊपरी सिरे पर हाथी, बैल, घोड़े या बैल की मूर्तियां जड़ी हैं। उन प्रतीकों के नीचे औंधे कमल के से कंठे बने हैं। कंठों पर तरह-तरह के बेल-बूटे और पशु-पक्षी उकेरे गए हैं। कला प्रेमी इनकी सजीवता और शक्ति की प्रशंसा करते थकते नहीं। इस कला का बहुत लम्बा इतिहास रहा होगा। हमारी कला कितनी समृद्ध थी इन कृतियों से यह सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। यह सब तभी संभव हो पाया जब उसे अशोक जैसे कला प्रेमी सम्राट का आश्रय मिला।

अशोक ने बौद्ध धर्म का प्रचार विदेशों में भी किया। उसने अपने पुत्र महेन्द्र और पुत्री संघ-मित्रा को लंका भेजा। विदेशों में धर्म फैलाने के लिए उसने एक धर्म सभा बुलाई जिसमें देश भर के विद्वान बौद्ध बुलाए गए। उसने राजदूतों के साथ धर्मदूत भी गांधार, मिस्र, मकदूनिया तथा उतरी अफ्रीका भेजे जहां उन्हें बड़ा आदर मिला।

अशोक दयालु और क्षमाशील था। उसके पूरे राज्य में सुशासन था। सब कहीं शान्ति विराजती थी। प्रजा धर्म की राह पर चलती थी। यही कारण है कि अशोक को 'अशोक महान्' कहा जाता है। उनके जन्म नक्षत्र पुनर्वसु के दिन प्रतिमास लोगों को शाकाहारी होने का आदेश था ताकि देश में किसी भी पशु-पक्षी से हिंसा न हो।

अभ्यास

1. भारत के संविधान निर्माताओं ने अशोक के किन-किन चिह्नों को राष्ट्रीय प्रतीक के रूप में चुना ?
2. अशोक का आरंभिक जीवन कैसा था ?
3. अशोक के जीवन में परिवर्तन कैसे संभव हुआ ?
4. कला के क्षेत्र में अशोक के योगदान का वर्णन करो।
5. अशोक ने बौद्ध धर्म को विदेशों में फैलाने के लिए क्या उपाय किए ?
6. अशोक की तरह अन्य भारतीय सम्राटों की जीवनियां पढ़ो तथा उनकी तुलना अशोक से करो।